P.G.
SEM-III
Paper -13

'धूमिल' और संसद से सड़क तक

साठोत्तरी हिन्दी कविता में धूमिल के नाम से जाने जानेवाले कवि सुदामा पाण्डे का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिला के अंतर्गत 9 नवम्बर 1936 को हुआ था। इनके पिता का नाम शिवनायक पाण्डे और पितामह का नाम विंदेश्वरी पाण्डे था। बारह वर्ष की आयु में धूमिल का विवाह लालपुर वाराणसी निवासी पं० नान्हक दीक्षित की कन्या मूरत देवी और कथाकार शिव प्रसाद सिंह के संपर्क में आए। इनके माध्यम से बाद में मार्क्सवादी समीक्षक डा० नामवर सिंह और उनके अनुज युवा कहानीकार डा० काशीनाथ सिंह ने घनिष्ठ रूप से जुड़े। डा० नामवर ने धूमिल के व्यक्तित्व को मॉस्जा त्रिलोचन ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और पंडित विद्यानिवास मिश्र जैसे चिंतकों के बीच उन्होंने साहित्य के नए काव्य मूल्यों और आयामों को गंभीरता से समझने का प्रयास किया। उनका आकस्मिक निधन ब्रेन ट्यूमर नामक बीमारी से 10 फरवरी 1975 को हो गयी।

धूमिल के तीन कविता संग्रह सामने आये हैं— 'संसद से सड़क तक', कल सुनना मुझे और सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र। इसमें पहली कविता संग्रह 'संसद से सड़क तक' उनके जीवन काल में प्रकाशित हुआ तथा बाद के दो संग्रह मरणोपरांत प्रकाशित हुए। इन पुस्तकों के माध्यम से धूमिल की एक सौ बाइस कविताएँ सामने आयी है। 'धूमिल' मात्र अनुभूति के नहीं विचार के भी कवि हैं। उनके यहाँ अनुभूतिपरक और विचारशील, इतिहास और समझ एक दूसरे से घुले मिले हैं और उनकी कविताएँ केवल भावात्मक स्तर पर नहीं बल्कि बौद्धिक स्तर पर भी सक्रिय होती है। 'धूमिल' ऐसा युवा कवि है जो उत्तरदायी ढंग से अपनी भाषा और फार्म को संयोजित करते हैं।

'संसद से सड़क' तक 'धूमिल' रचित पचीस कविताओं का संग्रह है। कविता बीस साल बाद मोचीराम उस औरत की बगल में लेटकर, राजकमल चौधरी के लिए पतझड़, नक्सलवादी पटकथा इत्यादि इस संग्रह की महत्वपूर्ण कविताएँ हैं।

'संसद से सड़क तक' की पहली कविता— कविता 'धूमिल की दृष्टि में किसी बौखलाए हुए आदमी का संक्षिप्त एकालाप मात्र है'—

उसके जाना हर लड़की तीसरी गर्भपात के बाद
धर्मशील हो जाती है और कविता हर तीसरे पाठ के बाद
नहीं — अब वहाँ कोई अर्थ खोजना व्यर्थ है।

स्पष्ट है कि यहाँ कवि ने 'कविता' शीर्षक कविता का वर्ण्य विषय लड़की या स्त्री की विवशता को बताया है। कविता भौतिक विवशताओं के कारण धर्मशीला बनी लड़की की तरह प्रत्येक तीसरे पाठ के बाद अनाकर्षित रूप में जीवन ढोती रही है। भौतिक आवश्यकताओं, उपेक्षाओं, यथार्थों की वास्तविक अभिव्यक्ति के कारण समकालीन कविता जनरुचि का कारण नहीं बन पायी है।

'बीस साल बाद' शीर्षक कविता के माध्यम से धूमिल आजादी की निरर्थकता से दुःखी है। अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न ही कहीं नहीं दिखलायी पड़ रही है। इसीलिए धूमिल आजादी शब्द पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं —

क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है

स्पष्ट है आजादी के बीस साल बीतने के बाद अवधि भारतीय नागरिकों के लिए सुखपूर्ण नहीं रही है। अपितु निराशा - दुराशा अभाव, आतंक, शोषण पीड़न के कारण मनुष्य की स्थिति जैसी हो रही है। कवि चिंतनशील लोगों से आजादी का अर्थ पूछना चाहता है। आजादी का अर्थ आजाद देश की ध्वजही बतलाया है। तिरंगा का केसरिया रंग भारत के नागरिकों की वीरता का उजला रंग सच्चाई का और हरा रंग हरियाली का प्रतीक है। इस झंडे पर वर्तमान चक्र हमारी गतिशीलता प्रगतिशीलता को प्रतिबिंबित करता है। लेकिन हमारे देश का नेता तिरंगे की मर्यादा को वर्तमान रखने में असमर्थ हो रहे हैं, इस बात से कवि दुःखी है।

'मोचीराम' शीर्षक कविता समाज के एक दलित पात्र की व्यवस्था से हमें परिचित कराती है जिसकी दृष्टि में समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक जोड़ी जूता की तरह है —

बाबू जी! सच कहूँ - मेरी निगाह में कोई छोटा न कोई बड़ा
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है।

स्पष्ट है यहाँ कवि ने जूते के प्रतीक संकेत और बिंब के द्वारा अपने कथन को सजीव बनाने का प्रयास किया है। महंगाई के कारण आज समाज के हर व्यक्ति अपने जूते की सीमा से बाहर निकल पाना असंभव है।

धूमिल की कवित्व भावना का एक और पक्ष उनका स्त्री की भावना है लेकिन समकालीन रूढ़ि से मुक्त

रहना है। मसलन स्त्री को लेकर लिखी गयी धूमिल की कविता "उस औरत के बगल में लेटकर" में किसी तरह का आत्मप्रदर्शन नहीं है बल्कि एक ठोस मानव स्थिति की जटिल गहराइयों में खोजा और टटोला है जिसमें दिखावटी आत्महीनता की अपेक्षा ऐसी पहचान है जिसे आत्म साक्षात्कार कहा जा सकता है। कवि का कथन है ——

उस औरत की बगल में लेटकर- मुझे लगा है हाँफते हुए
दलदल की बगल में जंगल होना आदमी की आदत नहीं लाचारी है

यहीं रचनाकार सूई की नोक या तलवार की धार से करती हुई घायल अपनी मानसिकता को जो समाज के बहुत बड़े हिस्से की मजबूरियों और उसकी निरुपाय सहनशीलता को अपनी रचना का कथ्य और उसका लक्ष्य बनाना चाहता है।

कुछ आलोचकों ने शब्द प्रयोग के आधार पर धूमिल को अकवितावादियों से जोड़कर कवि की सामाजिक चेतना पर प्रश्न चिन्ह लगाया है एक आलोचक का कथन है कि राजकमल-चौधरी तथा अन्य अकवितावादियों के प्रभाव से धूमिल ने कहीं-कहीं नारी को नग्न करने का प्रयास किया है। यह बात धूमिल-अरते 'राजकमल-चौधरी के लिए' कविता के संदर्भ में कही गयी है। उदाहरण !—

औरतें योनी की सफलता के बाद
गैंदा का गीत गा रही हैं
देह के अंधेरे में
ठर्रा और आनवाइन के पौधों का सपना
उग रहा है
— — —
× × ×

मासिक धर्म रुकते ही सुहागिन औरतें
सोहर की पंक्तियों का रस (चमड़े की निर्जनता को गीला करने के लिए)
नये सिरे से सोखने लगती है।
जाँघों में बढ़ती हुई लालच से
भविष्य के रंगीन सपनों को जोतने लगती है

'पतझड़' शीर्षक कविता में कवि देश में फैली हुई बेकारी पर गहरी-चोट करता है। कवि का कथन है —

इस देश की मिट्टी में
अपने जांगर का सुख तलाशना है

स्पष्ट है कि फूटी आँखों से जैसे भाव भंगिमा की अभिव्यक्ति असंभव है, वैसे ही अपने बलबूते पर अर्जित सुख

प्राप्त करना इस देश की जमीन पर प्राप्त कर पाना असंभव है इसके लिए दूसरों का सहारा सिफारिश 'रिश्वत' या राजनैतिक दबाव आवश्यक हो गया है।